10.02.25

Tendex Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh

कक्षा- नौवीं

विषय- हिन्दी व्याकरण

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौ, दस

उपविषय : प्रस्ताव लेखन

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौ-दस की पृष्ठ संख्या-45 पर दिए प्रस्ताव लेखन पर चर्चा करेंगे।

बच्चो ! प्रस्ताव लेखन वह विधा है जो विचारबद्ध और क्रमबद्ध रूप से लिखा जाता है। प्रस्ताव लेखन के विषय असीमित होते हैं। प्रस्ताव लेखन का विषय किसी भी प्रकार का हो सकता है। ये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक आदि किसी भी विषय पर लिखे जा सकते हैं। विश्व का हर विषय, हर वस्तु, हर व्यक्ति प्रस्ताव लेखन का केन्द्र हो सकता है।

प्रस्ताव का कलेवर प्राय: तीन भागों में विभक्त होता है :-

(क) प्रारंभ - इसमें दिए गए विषय / समस्या की प्रस्तावना होती है। विषय या समस्या की गंभीरता पर विचार इसी प्रारंभिक चरण में एक अनुच्छेद में करना चाहिए।

(ख) कथ्य विवेचन - इसमें विषय / समस्या पर तर्कपूर्ण विवेचन किया जाता है। विवरणात्मक तथा वर्णनात्मक प्रस्तावों में इसके अन्तर्गत मुख्य आयोजन की चर्चा होती है।

(ग) समापन भाग - इसमें अपने विवेचन के निष्कर्ष / सुझाव / समाधान आदि दिए गए होते हैं। प्रस्ताव का समापन भाग विद्यार्थी अपने-अपने दृष्टिकोण के आधार पर करते हैं।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी व्याकरण (प्रस्ताव लेखन)

बच्चो ! प्रस्ताव साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। प्रस्ताव लिखते समय निम्नलिखित कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए :-

प्रस्ताव लेखन से पूर्व विषय को ध्यानपूर्वक पढ़ें। यह प्रश्न विकल्प सहित होता है अतः सभी विकल्पों को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही विषय का चुनाव करें। लिखते हुए एक-दो बार प्रश्न को बीच में अवश्य पढ़ लें कि कुछ छूट तो नहीं गया है।

सूक्तिपरक प्रस्ताव को ध्यान से पढ़ें। उस पर 'लेख' लिखना है अथवा 'कहानी' निर्देश के अनुसार ही लिखें। सूक्ति का पहले या बाद में अर्थ अवश्य समझा दें।

प्रश्न एक का विकल्प 'चित्रलेखन' भी होता है। इससे निरीक्षण कौशल का विकास होता है। चित्र लेखन लिखते समय आप चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए। प्रस्ताव के प्रारंभ में यह लिखिए कि आप चित्र में क्या देख रहे हैं। चित्र में किसी व्यक्ति को आधार बनाकर कहानी लिख डालिए। कभी-कभी चित्र का भाव प्रस्ताव या निबंध के रूप में लिखा जा सकता है।

प्रस्ताव लेखन में भाषा सरल, शुद्ध एवं प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।

बच्चो ! आई. सी. एस. ई. के पाठ्यक्रम में पहला प्रश्न प्रस्ताव लेखन दिया जाता है। दिए गए विषयों की रूप-रेखा प्रश्न में ही होती है। आपको उन्हीं बिंदुओं पर अपने विचार अभिव्यक्त करने होते हैं। इस प्रश्न के लिए 15 अंक तथा लगभग 250 शब्द निर्धारित हैं। कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कहना ही अच्छे अंकों के लिए अपेक्षित है। भाषा का सटीक और परिमार्जित उपयोग अभ्यास से सीखा जा सकता है। इसलिए आपसे अनुरोध है कि आप खाली समय में अपनी पुस्तक में दिए गए सभी प्रस्ताव पढ़ें।

बच्चो ! अब मैं आपको निबंध का एक विषय

पढ़ कर सुनाऊँगी और उस विषय से जुड़ी कुछ जानकारी भी दूँगी। उसकी सहायता से आप निबंध को अच्छे ढंग से लिखने में सक्षम होंगे।

- विषय - "पुस्तकें केवल ज्ञान प्रदायिनी नहीं हैं अपितु जीवन की मार्गदर्शक भी हैं।" इस कथन के आधार पर पुस्तकों का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

यदि मनुष्य और पशु में भेद किया जाए तो केवल बुद्धि द्वारा ही किया जा सकता है। बुद्धि तथा ज्ञान के अभाव में मनुष्य निश्चय ही संसार का दयनीय प्राणी होता।

ज्ञान मनुष्य को या तो अपने गुरु से मिलता है या फिर पुस्तकों से। किंतु गुरु तो सीमित समय में ही ज्ञान देता है। वास्तव में देखा जाए तो पुस्तकें गुरुओं की भी गुरु होती हैं। पुस्तकें हमारी सच्ची हितैषी हैं। वास्तव में ज्ञान प्राप्ति और बुद्धि विकास के लिए विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक है।

मानव सभ्यता ही नहीं वरन् मानव संस्कृति के विकास का भी पूरा श्रेय पुस्तकों को ही जाता है। पुस्तकें अक्षय ज्ञान का भंडार हैं। पुस्तकों को पढ़ने से असीम सुख की प्राप्ति होती हैं।

लोकमान्य तिलक ने कहा है, "मैं नरक में भी पुस्तकों का स्वागत करूँगा क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी, वहाँ अपने-आप ही स्वर्ग बन जाएगा।"

बालकों में जीवन शक्ति और इच्छा शक्ति दोनों होती हैं। जीवन में कुछ बनने की, कुछ हासिल करने की इच्छा हर बच्चे के मन में होती है। इसीलिए अच्छी पुस्तकों के अध्ययन से उसका सही मार्गदर्शन होता है। जीवन में सफलता के उच्चतम सोपान पर पहुँचने के लिए महापुरुषों, वैज्ञानिकों व साहित्यकारों

एवं अन्य उच्च पदों पर आसीन होने वाले व्यक्तियों की जीवनियों और आत्मकथाओं का अध्ययन करना श्रेयस्कर होता है। इनके अध्ययन से हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। हृदय और मस्तिष्क विकसित होते हैं। जीवन को आलोक मिलता है। बच्चे में उत्साह जागता है, लोक व्यवहार का ज्ञान भी मिलता है।

पुस्तकें जहाँ एक ओर मनुष्य के व्यक्तित्व में एक नवीन निखार उत्पन्न करती हैं वहीं दूसरी ओर बुढ़ापे की लाठी भी हैं। ये मनुष्य को सच्चा सुख और शांति प्रदान करती हैं।

विचारों के युग में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। पुस्तकों में लिखे विचार संपूर्ण समाज की काया पलट कर देते हैं। यह संसार विचारों का संसार है। समाज में जब भी कोई परिवर्तन आता है अथवा क्रांति उत्पन्न होती है तो उसके मूल में कोई विचारधारा होती है।

हिन्दी साहित्य के अमर कथाकार मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों तथा उपन्यासों के माध्यम से भारतीय किसान की दीन-हीन स्थिति का चित्रण कर भारतीयों के हृदय में उनके प्रति सहानुभूति की भावना जागृत कर दी थी।

पुस्तकें पढ़ना समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग तथा उत्तम कोटि का मनोरंजन है। पुस्तकें एक उत्तम साथी की तरह हमारे साथ रहती हैं। हमसे बातें करती हैं, हमारे दुःख-सुख में सहायक होती है। यदि किसी के पास पुस्तक है तो वह कभी अकेलापन महसूस नहीं करेगा। पुस्तकें हमारी डगमगाती नौका की सशक्त पतवार हैं क्योंकि ये ज्ञान और मनोरंजन की वृद्धि का साधन होने के साथ-साथ मनुष्य की सद्गुरु हैं और जीवन पथ की संरक्षिका है।

बच्चो! अब मैं आपको निबंध का एक विषय गृहकार्य के रूप में दे रही हूँ। आप सभी विषय

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी व्याकरण ('प्रस्ताव लेखन')

को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं 250 शब्दों में एक सुन्दर लेख लिखेंगे।

गृहकार्य

- वृक्षों का महत्त्व बताते हुए वृक्षारोपण की आवश्यकता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]